मैसूर नरसिम्हाचार श्रीनिवास (एम.एन श्रीनिवास)
श्रीनिवास की एक महत्वपूर्ण अवधारणा संस्कृतिकरण है।
श्रीनिवास ने प्रभु जाति पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण , लौकिकीकरण आदि अवधारणा प्रस्तुत की है।
श्रीनिवास ने मैसूर में विवाह एवं परिवार पर पी.एच.डी की उपाधि ली है।
श्रीनिवास ने प्रभु जाति के साथ जुड़े चार कारक बताएं हैं -
१- संख्यात्मक शक्ति
२- संसाधनों पर नियंत्रण
३- राजनीतिक शक्तियों पर अधिकार
४- सामाजिक - राजनीतिक प्रस्थिति ।
श्रीनिवास "यादगार " गांव नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है।
श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण प्रक्रिया द्वारा जाति - गतिशीलता का परिवर्तन के अध्ययन हेतु किया है।
श्रीनिवास ने 'शीर्ष एकजुटता ' तथा 'क्षैतिज एकजुटता' अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है।
श्रीनिवास ने धार्मिक ग्रंथों से संबंधित ज्ञान को बुक व्यू (किताबी दृष्टि) कहा है ।
श्रीनिवास ने लिखा है कि यदि समाजशास्त्र को सर्जनात्मक (क्रिएटिव) बनाना है, तो उसे देशज बनाना होगा।
श्रीनिवास ने समाजशास्त्र के स्वदेशीकरण (नेटिविटी) का मार्ग प्रशस्त किया है।
श्रीनिवास ने भारतीय समाजशास्त्र में दो प्रमुख अवधारणाएं विकसित की है -
१- बुक व्यू (किताबी दृष्टिकोण)
२- फील्ड व्यू (क्षेत्र कार्य पर आधारित दृष्टिकोण)।
श्रीनिवास धर्म , वर्ण जाति, परिवार, ग्राम और क्षेत्र संरचना को भारतीय समाज का मूल आधार माना है और इन मूल आधारों से संबंधित धर्म ग्रंथों को " बुक व्यू" कहा है, जिसे अन्य समाज वैज्ञानिक इंडोलॉजी कहते हैं।
श्रीनिवास इंडोलॉजी को नकारते हुए फील्डव्यू यानी फील्ड वर्क को महत्वपूर्ण मानते हैं।
श्रीनिवास अपनी स्वदेशीकरण अवधारणा द्वारा क्षेत्र कार्य के माध्यम से ग्रामीण जीवन के अधिकाधिक अनुभव बटोरना चाहते थे ।
श्रीनिवास जातिगत आरक्षण के पक्ष में नहीं थै।
श्रीनिवास पुरातन और नवीन प्रभु जातियों के बीच उत्पन्न संघर्ष की ओर संकेत करते हुए कहा है कि भारतीय प्रजातंत्र का प्रमुख कार्य अत्यधिक पिछड़े इलाकों में प्रभु जाति के प्रभुत्व को समाप्त होना चाहिए।
श्रीनिवास ने ब्राह्मणों की सांस्कृतिक और अनुष्ठानिक समानता को क्षैतिज फैलाव (जातीय आधारित) कहा है ।
श्रीनिवास ने एक भाषिक क्षेत्र (हिंदी भाषी क्षेत्र) सांस्कृतिक रूप से एक सजातीय क्षेत्र माना है तथा एक भाषिक क्षेत्र के ब्राह्मणों द्वारा सांस्कृतिक एवं अनुष्ठानिक रूपों को उसी क्षेत्र के अन्य जातियों एवं नीची जातियों के साथ संपन्न करने को ऊर्ध्वगामी फैलाव (एक क्षेत्र की सभी जातियों में) कहते हैं। एम.एन श्रीनिवास फैलाव की सैद्धांतिक विवेचना की है । वे कहते हैं कि जैसे -जैसे क्षेत्र बढ़ता है पूजा और अनुष्ठानों के सामान्य रूप घटते हैं।
श्रीनिवास हिंदू धर्म के लिए फैलाव (स्प्रेड) की अवधारणा प्रस्तुत की है । वे लिखते हैं कि हिंदू धर्म चार स्तरों में विद्यमान है -
१- अखिल भारतीय हिंदुत्व
२- प्रायद्वीपीय हिंदुत्व
३- क्षेत्रीय / प्रादेशिक हिंदुत्व और
४- स्थानीय हिंदुत्व।
श्रीनिवास का सुझाव है कि यदि जाति को समझना है तो वर्ग मॉडल को छोड़ देना होगा।
श्रीनिवास का जाति के संदर्भ में मत है कि -
१- जाति हिंदू समाज का संरचनात्मक आधार है।
२- जातियों में उर्ध्व (वर्टिकल) और क्षैतिज (हारिजोण्टल) एकजुटता पाई जाती है ।
३- एक क्षेत्र की जातियों में साझी संस्कृति होती है, जिन्हें शीर्ष एकजुटता कहते हैं।
४- एक ही जाति के सभी सदस्य समान परंपराओं, तीज त्योहारों को मानते हैं, उसे क्षैतिज एकजुटता कहते हैं।

श्रीनिवास ने लिखा है कि संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से जातीय गतिशीलता और पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण तथा लौकिकीकरण की प्रक्रियाओं से व्यापक सामाजिक परिवर्तन होता है।

श्रीनिवास ने लिखा है कि पश्चिमीकरण ने हिंदुओं के जीवन में संस्कृतिकरण को अधिक मात्रा में तीव्रता को बढ़ाया है।

श्रीनिवासने संस्कृतिकरण को सांस्कृतिक अवधारणा न कि संरचनात्मक माना है। वे आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण को नैतिक दृष्टि से तटस्थ अवधारणा नहीं मानते।

श्रीनिवास ने लिखा है कि आधुनिकता और आधुनिकीकरण में अच्छे - बुरे का भाव निहित होता है।

प्रभु जाति : एम.एन.श्रीनिवास

श्रीनिवास प्रभु जाति की अवधारणा को संस्कृतिकरण से संबध्द मानते हैं।

श्रीनिवास के अनुसार प्रभुजाति वह जाति हैं जिसकी एक क्षेत्र विशेष में संख्या अन्य जातियों की अपेक्षा काफी कम होती है और उनकी पारंपरिक पदानुक्रम स्थिति तथा आर्थिक समृद्धि उत्तम होती है ।

श्रीनिवास ने प्रभु जाति (डोमिनेंट) की अवधारणा में आधारभूत उच्चता या निम्नता का गुण नहीं है। अपितु आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता के साथ क्षेत्र विशेष में संख्यात्मक प्रमुख होती है। यह वास्तव में सत्ता और शक्ति पर आधारित अवधारणा है।

श्रीनिवास ने प्रभु जाति की अवधारणा में यह स्पष्ट किया है कि अब जाति-पदक्रम केवल सांस्कारिक प्रस्थिति पर आधारित नहीं है, बल्कि सत्ता और संपदा भी इसके निर्धारक हैं। श्रीनिवास ने लिखा है कि पश्चिमी शिक्षा, आरक्षण की व्यवस्था, उच्चस्थ पदों में निम्न जाति के लिए नौकरियों के कारण प्रभु जाति की प्रारंभिक आधारक लड़खड़ा गए हैं।

श्रीनिवास प्रभुत्वता का निर्धारण अब गांव स्तर पर नहीं वरन क्षेत्रीय आधार पर करते हैं।

संस्कृतिकरण :एम.एन. श्रीनिवास

श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण को एक अनुकरण की प्रक्रिया मानते हैं ।

श्रीनिवास के अनुसार 'संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक निम्न जाति या जनजाति या कोई अन्य समूह किसी उच्च जाति विशेषत: द्विज के रीति-रिवाजों, कर्मकांडो, विश्वासों और जीवनशैली को अपना लेता है। श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण का तात्पर्य नवीन रीति-रिवाजों और आदतों को अपनाना मात्र नहीं है, अपितु नए नए विचारों और मूल्यों को अनावृत (ग्रहण) करना भी है जो धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के संस्कृत साहित्य के विशाल भंडार में उल्लिखित है।

श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण उर्ध्व गतिशीलता को प्रेरित करती है जो पदात्मक परिवर्तन का द्योतक है न की व्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन का ।

श्रीनिवास ने अंतर्जातीय संबंधों की यथार्थता और गतिकी को समझने के लिए संस्कृतिकरण, प्रभुजाति, पश्चिमीकरण और लौकिकीकरण अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है।

श्रीनिवास ने पहले कुर्ग (मैसूर) बाद में रामपुरा (मैसूर जिले का गांव) का अध्ययन किया है।

प्रमुख कृतियां : एम.एन.श्रीनिवास

१-मैरिज एंड फैमिली इन मैसूर, 1942
२- रिलीजन एंड सोसाइटी एमंग दी कुर्गस आफ साउथ इंडिया ,1952
३- इंडियाज विलेज, 1955
४- कास्ट इन मॉडर्न इंडिया एंड अदर एसेज, 1962
५- सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, 1966
६- इंडिया : सोशल स्ट्रक्चर , 1969
७- दी रिमेंबर्ड विलेज, 1976
८- नेशन बिल्डिंग इन इंडिपेंडेंट इंडिया, 1976
९- डाइमेंशनस आफ सोशल चेंज इन इंडिया, 1977
१०- माई बरोदा डेज, 1981
११- दी डोमिनेंट कास्ट एंड अदर एसेज, 1986

१२- दी कोहसिव रोल ऑफ संस्कृताइजेशन, 1989
१३- आन लिविंग इन ए रिवॉल्यूशन एंड अदर एसेज, 1992
१४- सोशियोलॉजी इन दिल्ली, 1993
१५- विलेज, कास्ट, जेंडर एंड मेथड ,1996
१६- कास्ट : इट्स ट्वैन्टीथ सेंचुरी अवतार
१७- इंडियन सोसाइटी थ्रो पर्सनल राइटिंग्स 1996।